विचार बिन्दु

सज्जन पुरुष की वास्तविक परिभाषा यही है कि वह कभी किसी पुरुष को पीड़ित नहीं करता।
–सी. न्यूमैन

किसानों से धोखा आखिर कब तक?

राजस्थान कृषि प्रधान प्रदेश है। यहां लाखों किसानों की आजीविका खेती पर निर्भर है। किसान के लिए बीज केवल कृषि सामग्री नहीं, बल्कि उसकी पूरी फसल, परिवार की आय और आर्थिक सुरक्षा का आधार है। ऐसे में यदि उसे उन्नत बीज के नाम पर घटिया या अमानक बीज उपलब्ध करा दिया जाए तो नुकसान केवल एक फसल का नहीं, बल्कि किसान के पूरे आर्थिक चक्र का होता है। राजस्थान में मक्का के बीज को लेकर सामने आया हालिया मामला इसी गंभीर चिंता को जन्म देता है।

समाचार रिपोर्ट के अनुसार, खरीफ मौसम में प्रदेश के लगभग 8 लाख किसानों को उन्नत बीज के नाम पर मक्का का घटिया बीज वितरित किया गया। इसके नमूने राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो को जांच के लिए भेजे गए और वे निर्धारित मानकों पर खरे नहीं उतरे। इससे मक्का की पैदावार में 25 से 30 प्रतिशत तक कमीआने की आशंका जताई गई है।

सवाल सीधा है–जब बीज की गुणवत्ता ठीक नहीं थी तो वह किसानों तक पहुंचा कैसे? गुणवत्ता परीक्षण किस स्तर पर हुआ? जिम्मेदारी किसकी थी? और सबसे महत्वपूर्ण, जिन किसानों की फसल प्रभावित होगी, उनके नुकसान की भरपाई कौन करेगा?

किसान पहले ही मौसम की अनिश्चितता, महंगे कृषि आदान, सिंचाई संकट और फसल के उचित मूल्य की समस्या से जूझ रहा है। यदि सरकार की निगरानी में वितरित बीज पर भी किसान भरोसा नहीं कर सकता तो कृषि व्यवस्था में विश्वास कैसे कायम रहेगा?

यह समस्या केवल बीज तक सीमित नहीं है। उर्वरकों की गुणवत्ता और उनकी बिक्री को लेकर भी किसानों की शिकायतें गंभीर हैं। नैनो यूरिया इसका एक प्रमुख उदाहरण है। इफको ने नैनो यूरिया लिक्विड को विकसित करने के बाद यह दावा किया कि इसकी एक बोतल 45 किलो की यूरिया की एक बोरी के बराबर उत्पादन क्षमता प्रदान कर सकती है। इसका व्यापक प्रचार हुआ। लेकिन प्रस्तुत विवरण के अनुसार, कृषि विश्वविद्यालयों में हुए प्रयोगों और किसानों के अनुभवों में उत्पादन बढ़ने के बजाय कई मामलों में कमी की शिकायत सामने आई।

यहां वैज्ञानिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है। 500 मिलीलीटर नैनो यूरिया में लगभग 20 ग्राम नाइट्रोजन होने की बात कही जाती है, जबकि 45 किलो यूरिया की बोरी में लगभग 20 किलो नाइट्रोजन होता है। ऐसे में दोनों को उत्पादन की दृष्टि से बराबर बताने के दावे की वैज्ञानिक पुष्टि आवश्यक है। यदि किसी कृषि उत्पाद का प्रचार वैज्ञानिक परीक्षणों से पुष्ट नहीं है तो उसका व्यापक उपयोग किसानों के लिए जोखिमपूर्ण हो सकता है। स्थिति तब और गंभीर हो जाती है जब किसान संगठनों ने यह शिकायत की कि पारंपरिक अथवा यूरिया के साथ नैनो यूरिया या अन्य उत्पाद खरीदना अनिवार्य किया जा रहा है। अर्थात किसान को कहा जाता है कि यूरिया लेना है तो नैनो भी लेना पड़ेगा। दस्तावेज के अनुसार, ऐसी जबरन टैगिंग की शिकायतों के बाद केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 13 जुलाई 2025 को सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखकर पारंपरिक उर्वरकों के साथ नैनो उर्वरकों की जबरन टैगिंग रोकने के निर्देश दिए।

किसान के साथ धोखा केवल आर्थिक नुकसान नहीं है। यह देश की खाद्य सुरक्षा और कृषि व्यवस्था के विश्वास पर चोट है। इसलिए सरकार को अब यह जवाब देना ही होगा-8 लाख किसानों तक अमानक मक्का बीज कैसे पहुंचा, इसके लिए कौन जिम्मेदार है और किसानों के नुकसान की भरपाई कब होगी?

इस निर्देश में यह भी कहा गया कि पारंपरिक उर्वरकों के साथ नैनो यूरिया, नैनो और बायो-स्टिमुलेंट की जबरन बिक्री नहीं होनी चाहिए। इसे उर्वरक नियंत्रण आदेश 1985 और आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 के प्रावधानों के संदर्भ में गंभीर विषय माना गया।

राजस्थान में नकली और घटिया उर्वरकों के मामले भी चिंता बढ़ाते हैं। दस्तावेज के अनुसार, 28 सितंबर 2025 की रात कृषि मंत्री डॉ. किरोड़ीलाल मीणा ने कोलायत क्षेत्र में कार्रवाई के दौरान 24,000 बैग तथा सांखला फांटे के पास 40,000 बैग बरामद किए, जिनमें मिट्टी मिलाकर खाद तैयार किए जाने की बात सामने आई। शाहपुरा में नमक, बाजरी और लाल रंग मिलाकर नकली पोटाश तैयार करने का मामला भी सामने आया। वहां 50 किलो के 4,120 कट्टे तैयार किए गए थे और कथित रूप से महज लगभग 70 हजार रुपये की सामग्री को 61.80 लाख रुपये में किसानों को बेचने की तैयारी थी।

इसी प्रकार 7 जून 2025 को जयपुर-सीकर रोड स्थित ट्रांसपोर्ट नगर में बिना लाइसेंस चल रही एक फैक्ट्री पर कार्रवाई में औद्योगिक नमक, सोडियम सल्फेट के कट्टे और प्रतिबंधित फोरेट के पैकेट जब्त किए जाने की जानकारी भी सामने आई है।

ये घटनाएं एक बड़े संकट की ओर संकेत करती हैं। किसान को बीज और खाद के नाम पर क्या दिया जा रहा है, इसकी स्वतंत्र और वैज्ञानिक जांच क्यों नहीं हो रही? कृषि विभाग की निगरानी व्यवस्था केवल कागजों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए।

सरकार को अब तत्काल एक किसान-केंद्रित गुणवत्ता निगरानी प्रणाली बनानी चाहिए। बीज और उर्वरक के प्रत्येक बैच के नमूने स्वतंत्र प्रयोगशालाओं में जांचे जाएं। जांच रिपोर्ट सार्वजनिक पोर्टल पर उपलब्ध हो। अमानक बीज मिलने पर संबंधित कंपनी, वितरक और लापरवाही करने वाले अधिकारियों की जिम्मेदारी तय हो। प्रभावित किसानों की फसल का वैज्ञानिक सर्वेक्षण कर उचित मुआवजा दिया जाए।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसान को किसी भी कृषि उत्पाद की जबरन खरीद के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए। कृषि तकनीक और नए उत्पाद तभी स्वीकार किए जाने चाहिए जब उनके लाभ स्वतंत्र वैज्ञानिक परीक्षणों से प्रमाणित हों।

किसान के साथ धोखा केवल आर्थिक नुकसान नहीं है। यह देश की खाद्य सुरक्षा और कृषि व्यवस्था के विश्वास पर चोट है। इसलिए सरकार को अब यह जवाब देना ही होगा–8 लाख किसानों तक अमानक मक्का बीज कैसे पहुंचा, इसके लिए कौन जिम्मेदार है और किसानों के नुकसान की भरपाई कब होगी?

उन्नत बीज के नाम पर घटिया बीज और खाद के नाम पर नकली सामग्री बेचने वालों पर कठोर कार्रवाई के बिना किसान कल्याण का दावा अधूरा ही रहेगा।

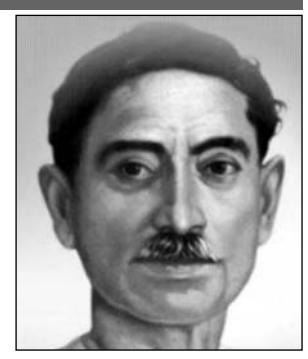
–अतिथि सम्पादक,
प्रोफेसर (डा.) पी.सी. कंठालिया,
पूर्व विभागाध्यक्ष (मृदा विज्ञान) एवं मुख्य वैज्ञानिक,
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

मुंशी प्रेमचंद जी : जनजीवन के कथाकार, समाज के सच्चे चित्रकार

8 अक्टूबर, 2026, प्रेमचन्द जी की 90वीं पुण्यतिथि पर विशेष....



प्रो. राजीव सक्सेना



मुंशी प्रेमचंद जी : प्रेमचन्द जी का जन्म 31 जुलाई, 1880 को लमही गांव (वाराणसी-उत्तर प्रदेश) में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम अजायबराय तथा माता का आनन्दी देवी था। प्रेमचंद जी का वास्तविक नाम धनपतराय श्रीवास्तव था। उनकी मृत्यु 8 अक्टूबर, 1936 को 56 वर्ष की अल्पायु में 'जलोदर' रोग द्वारा हुई।

कहानियों के मील का पत्थर भीष्म पितामह, पुरोधा, महा झूमर, सुमेरू पर्वत, जामवन्त, कायस्थ-कुल गौरव रत्न, हिन्दी व उर्दु भाषा के शेक्सपीयर व जन्मजात प्रतिभा युक्त मुंशी प्रेमचन्द जी, जो कि महानतम कहानीकार व उपन्यास सम्राट तथा एक महाकवि थे। सीधी सादी गंभीर बेलोस बेमुरव्वत व बेमोहब्बत, प्रभावी शक्ल के मालिक जिनका नाम धनपत राय भी था जो कि बिल्कुल गंवई, कस्बाई, भुच्च शक्ल व सांवले रंग के मालिक जो सामान्यत बंद गाढ़े का कुर्ता पजामा तथा चमरौधीं जूता पहनते थे जो चर्र-चर्र की आवाज करते थे, एक अलग ही शख्सियत, व्यक्तित्व था जो कि लोगों पर आसानी से हावी हो जाता था। मुंशी जी की लेखनी हिन्दी व उर्दु दोनों भाषाओं में लाजवाब थी, त्वरित व समान चलती थी व आज भी एक वैश्विक व अन्तराष्ट्रीय पहचान बनी हुई है। प्रेमचन्द जी ने समकालिन व सम-सामयिक व यथार्थ परख जमीनी दुनिया से जुड़े हुए विषयों पर लगभग 300 से ज्यादा कहानियाँ लिखी व 15 के आसपास उपन्यास, 10 अनुवाद, 7 बाल पुस्तकें व तीन नाटक लिखे तथा सैकडो-हजारों पन्नों के लेख संपादकीय, पत्रकारिता लेखन, भूमिका व भाषण लेखन साथ ही साथ काफी सारी रचनाएं व पत्र आदि लिखे, जो कि अपने आप में बेमिसाल तथा बेजोड़ थे। उनकी मुख्य कहानियों में ठाकुर का कुआ, पूस की रात, दो बैलों की कथा, पंच परमेश्वर, कफ़न, बड़े भाई साहब, नशा, बूढी काकी, शतरंज के खिलाड़ी, नमक का दरोगा, ईदगाह तथा मंत्र आदि आदि व उपन्यास, रंग भूमि, गोदान, गबन, सेवासदन, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि आदि व आखरी अधूरा लिखित उपन्यास 'मंगलसूत्र' था।

प्रेमचन्द जी की रचनाएं आज भी कालजयी व प्रासंगिक है। उन्हें हिन्दी का शेक्सपीयर यूही नही कहा जाता है। उनकी प्रत्येक रचना, कहानी व उपन्यास हमेशा एक परम्परा व काली सच्चाई के इर्द-गिर्द घूमते हैं। उन्होंने 1901 में उपन्यास लिखना शुरू किया तथा कहानियां लगभग 1907 से लिखना शुरू की। उनकी कहानियों व उपन्यासों में जमकर व तबीयत से लोकोक्तियों, कहावतों, मुहावरों तथा गंवई शब्दों व भाषा का उपयोग होता था।

1910 में स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के दौरान उनकी कहानी 'सोजे वतन' जब्त कर ली गई तथा उसकी अनेकों प्रतियां फाड़ दी व जला दी गई। उस समय अंग्रेजों के शासन काल में जब लोग कानपुर से प्रसारित होने वाले अखबार में 'रफ्तार-ऐ-जमाना' जैसे कॉलम में वो लिखा करते थे व लोग उसे पढ़कर उनकी सराहना करते थे। अत: वो एक अच्छे पत्रकार व कवि भी थे। उर्दू भाषा में वो नवाबराय के नाम से लिखते थे। उन्होनें हिन्दी कहानियों, उपन्यास, रचनाओं व हिन्दी साहित्य को नये विविधा विविध बहु आयाम दिये।

1923 में उन्होंने सरस्वती प्रेस की स्थापना की व 1930 में 'हंस पत्रिका' का प्रकाशन शुरू किया। लगभग 300 से ज्यादा लिखी कहानियों में आम आदमी की दुर-2 करती, लिज लिजी जिन्दगी, गरीबी-अमीरी व उनकी चुभन, घुटन, प्रतिशोध, कसक, अंधविश्वास, दंभ व घमंड तथा रूढिवादी परंपराओं पर भरपूर प्रहार किया व हरेक जन व पाठकों को सोचने पर मजबूर किया। साथ ही साथ मानवीय मूल्यों को भी सहेज कर रखा जो उनकी कहानियों में स्पष्ट परिलक्षित व प्रभावी होते दिखते है। 1910 की घटना के बाद उनके परम मित्र दया नारायण निगम जो कि 'जमाना' अखबार के संपादक थे, उन्होंने, उन्हें प्रेमचन्द नाम से लिखने की सलाह दी, तब उन्होंने नवाबराय नाम के बजाय प्रेमचन्द नाम से लिखना शुरू किया। 20वीं सदी के भारत में 1935 तक, उस दौरान जातिवाद, छुआछुत, संकीर्णता की भावना, साम्प्रादायिक संकीर्णता, ऊँच-नीच का भेदभाव, गरीबों मजदूरों व श्रमिको का शोषण तो चलता ही था तथा इन सबसे अलग व विशेषकर महिलाओं को हेय व हीनदृष्टि से देखना अपने सर्वोच्चतम शिखर पर था। उस समय अंग्रेजों व फिरंगियों के राज मे अंग्रेज लोग यही सोचते थे कि साहित्य लिखना, समझना व पढ़ना सिर्फ अंग्रेजों को ही आता है या उन्हीं का ये सर्वसिद्ध अधिकार है व सिर्फ अंग्रेज लोग ही पढ़-लिख सकते है व लेखन कार्य कर सकते हैं। इस विषम काल में एक आवाज व लेखनी प्रेमचन्द जी के रूप में ऐसी निकली, जिसकी गूंज की गूंज आज-तक देश-विदेशों में गूंज रही है।

'सेवा सदन' (बाजार-ए-हुस्न), गबन, निर्मला, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, रंगभूमि जैसे अनेकों उपन्यास लिखे, जिनकी आज भी कोई काट नहीं है। 'गोदान' उपन्यास तो पूरे ग्रामीण जीवन व परिवेश तथा रूढिवादी प्राचीन परंपराओं को दर्शाता, दिखाता है। उन्होंने सामाजिक कुरूतियों, अंधविश्वास व ग्रामीण समस्याओं से निकलकर लोगों को अपनी लेखनी के माध्यम से बताया, समझाया व लोहा मनवाया। प्रेमचन्द जी संभवत: सदी के प्रथम ऐसे रचनाकार व साहित्यकार थे, जिन्होंने उपन्यास, कहानी व कथा लेखन को कपोल-कल्पित कल्पनाओं तथा कल्पनालोक के प्रभाव से निकलकर व लोगों को निकालकर आमजनों को वास्तविकता व जमीनी हकीकतों व विशुद्ध यथार्थ से अवगत करवाया।

उन्होंने सरल, सहज व सामान्य, जन साधारण वेशभूषा का उपयोग किया व उन्हें अपने प्रयोग में लाये। उपन्यास के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान को देखते हुए, बंगाल के योग्य, प्रख्यात व लब्ध प्रतिष्ठित उपन्यासकार शरदचन्द्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें 'उपन्यास-सम्राट' कहकर संबोधित किया। 1930 के आस पास उनका गांधीवाद से मोहभंग हो गया। 'गोदान' इसका सशक्त उदाहरण है इसमें किसान के शोषण, गरीबी तथा उसकी दुर्दशा का ऐसा भयावह चित्रण किया है कि अंत में किसान पात्र 'होरी' की मृत्यु ने पाठकों के अर्न्तमन को अंदर तक झकझोर दिया। कहानी 'ईदगाह' के माध्यम से प्रेमचन्द जी ने यह संदेश दिया कि गरीबी बच्चों को उम्र से पूर्व ही बड़ा बना देती है।

असल में व अंत में यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि प्रेमचन्द जी कहानी, कविता, पत्रकारिता, संपादन व लेखन क्षेत्र तथा उपन्यास लिखने के संबंध में वे साहित्य का हिमालय व सुमेरू पर्वत थे जिनकी समस्त रचनाएं कालजयी है वे आज भी बेजोड़ है, चंद पन्नों व पंक्तियों में उन्हें व उनके साहित्य को पूर्णरूपेण समेटना मुश्किल ही नही नामुमकिन है। उनकी मृत्यु 8 अक्टुबर, 1936 को 56 वर्ष की अल्प आयु में 'जलोदर' रोग के द्वारा हुई। वे हमेशा आडम्बर व दिखावे से दूर रहते थे तथा अपना काम खुद करना पसन्द करते थे, अगर वे 35-40 वर्ष और जीते तो ऐसे महाकाव्य, उपन्यास व कहानियां, लेखन आदि लिख जाते जिनकी कल्पना करना, काफी अतीत से परे व कठिन है। उनकी पुण्यतिथि पर उन्हें सहस्त्र कोटि नमन व शत्-2 प्रणाम।

-प्रो.डॉ. राजीव सक्सेना,
वरिष्ठ हौम्योपैथ आचार्य व
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर।

सेवा संकल्प अभियान : 25 वर्षों की सेवा, संकल्प और परिवर्तन की जनयात्रा



डॉ. मनीषा सिंह

कभी-कभी किसी यात्रा को समझने के लिए केवल रास्ते नहीं, बल्कि उन रास्तों पर चलने वाले लोगों की आँखों में आए बदलाव को देखना पड़ता है। 'सेवा संकल्प अभियान' भी ऐसी ही एक यात्रा की कहानी है जहाँ 25 वर्षों का सफर केवल वर्षों की गिनती नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों के जीवन में आए बदलाव, उम्मीद और आत्मविश्वास की कहानी है।

जन सेवा से देश सेवा यह केवल एक पंक्ति नहीं, बल्कि उस विचार की अभिव्यक्ति है जिसमें शासन को जनता से जोड़ने और विकास को जनभागीदारी से आगे बढ़ाने का प्रयास दिखाई देता है। वर्ष 2001 में गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शुरू हुई नरेंद्र मोदी की शासन-यात्रा 2026 में 25 वर्षों के पड़ाव तक पहुंची है। स्वयं प्रधानमंत्री ने भी इस अवसर पर कहा कि इन वर्षों में उनका निरंतर प्रयास लोगों के जीवन को बेहतर बनाने और राष्ट्र की प्रगति में योगदान देने का रहा है।

इन 25 वर्षों को केवल राजनीतिक या प्रशासनिक उपलब्धियों से नहीं मापा जा सकता। इसकी असली तस्वीर उस माँ के चेहरे पर दिखाई देती है, जिसे अपनी बेटी की शिक्षा का भरोसा मिला; उस किसान में दिखाई देती है जिसे पानी और बिजली की बेहतर सुविधा मिली; उस गरीब परिवार में दिखाई देती है, जिसके लिए बैंक खाता, स्वास्थ्य सुरक्षा या आवास जैसी सुविधाएँ पहली बार वास्तविकता बनीं।

25 वर्ष, 25 परिवर्तनकारी उपलब्धियाँ :-

कन्या केलवणी एवं शाला प्रवेशोत्सव ने बालिका शिक्षा और स्कूल नामांकन को सामाजिक अभियान बनाया। स्वागत ने नागरिकों की शिकायतों को सीधे प्रशासन के शीर्ष स्तर तक पहुँचाने का माध्यम बनाया और लाखों शिकायतों के समाधान की व्यवस्था विकसित की।

वहीं ज्योतिग्राम योजना ने गुजरात के हजारों गांवों में बिजली आपूर्ति को अधिक विश्वसनीय बनाया। गरीब कल्याण मेला के माध्यम से सरकारी योजनाओं के लाभ सीधे जरूरतमंदों तक पहुँचाने का प्रयास हुआ। वनबंधु कल्याण योजना ने आदिवासी समाज के शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और आधारभूत सुविधाओं पर ध्यान केंद्रित किया। वहीं सागरखेडू सर्वांगीण विकास ने तटीय क्षेत्रों के लाखों लोगों के जीवन और आजीविका को विकास से जोड़ा।

जन-धन योजना ने बैंकिंग और सरकारी लाभों को सीधे नागरिकों तक पहुँचाने में बड़ी भूमिका निभाई।मेक इन इंडिया ने विनिर्माण और आत्मनिर्भरता को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाया। स्वच्छ भारत मिशन ने स्वच्छता को सरकारी कार्यक्रम से आगे बढ़ाकर जनआंदोलन का रूप दिया। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं ने करोड़ों लोगों को बीमा और पेंशन जैसी सुरक्षा से जोड़ा।

इसी प्रकार सागरमाला ने बंदरगाहों, सड़क, रेल और तटीय अर्थव्यवस्था को जोड़ने की दिशा में काम किया। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना ने छोटे उद्यिमयों को बिना जमानत ऋण उपलब्ध कराकर स्वरोजगार को प्रोत्साहित किया। स्टार्टअप इंडिया ने युवाओं में उद्यमिता की नई आकांक्षा पैदा की और 2.5 लाख से अधिक मान्यता प्राप्त स्टार्टअप का एक बड़ा पारिस्थितिकी तंत्र विकसित हुआ। उज्ज्वला योजना ने करोड़ों महिलाओं को धुएँ से मुक्ति और स्वच्छ ईंधन की सुविधा दी। यूपीआई ने डिजिटल भुगतान को आम भारतीय के दैनिक जीवन का हिस्सा बना दिया। जीएसटी ने 'एक देश, एक कर, एक बाजार' की दिशा में कर व्यवस्था को एकीकृत किया। आयुष्मान भारत ने गरीब और जरूरतमंद परिवारों के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा का व्यापक आधार तैयार किया।

जल जीवन मिशन ने ग्रामीण घरों तक नल से जल पहुंचाने की दिशा में अभूतपूर्व विस्तार किया। पीएम - किसान योजना के माध्यम से किसानों को प्रत्यक्ष आर्थिक सहायता पहुंचाई गई। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ व लखपति दीदी अभियान ने बच्चियों और महिलाओं को शिक्षा से आगे बढ़ाकर स्थायी आय और उद्यमिता से जोड़ने का प्रयास किया। भारत की सौर क्रांति ने स्वच्छ ऊर्जा और नवीकरणीय ऊर्जा को नई गति दी।

पीएम स्वनिधि ने रेहड़ी-पटरी वालों को औपचारिक वित्तीय व्यवस्था से जोड़कर आत्मनिर्भर बनने का अवसर दिया। पीएम गति शक्ति ने सड़क, रेल, बंदरगाह और हवाई अड्डों जैसी बुनियादी परियोजनाओं को एकीकृत दृष्टि से आगे बढ़ाया। स्वामित्व योजना ने ड्रोन और तकनीक के माध्यम से ग्रामीण संपत्तियों के स्वामित्व को अधिक व्यवस्थित बनाने की दिशा में काम किया। खेल और खेलो इंडिया ने गांवों और स्कूलों से प्रतिभाओं को आगे लाने तथा भारत को खेल शक्ति बनाने की दिशा में नई ऊर्जा दी।

लेकिन इन उपलब्धियों की सबसे बड़ी विशेषता केवल आंकड़े नहीं हैं। असली उपलब्धि है लोगों का बदलता विश्वास कि सरकार की योजनाएँ उनके जीवन को छू सकती हैं और वे स्वयं भी देश की विकास यात्रा के सहभागी बन सकते हैं। आज सेवा का अर्थ केवल किसी जरूरतमंद की मदद करना नहीं रह गया है। सेवा का अर्थ है किसी बच्चे को शिक्षा के लिए प्रेरित करना, किसी किसान को नई तकनीक की जानकारी देना, किसी महिला को आत्मनिर्भर बनने का अवसर देना, स्वच्छता को अपनी आदत बनाना और अपने आसपास के समाज को बेहतर बनाने में योगदान देना।

यही कारण है कि सेवा संकल्प अभियान को केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक जनभावना के रूप में देखना चाहिए। 25 वर्षों की यात्रा हमें बताती है कि जब शासन की नीयत, जनभागीदारी और सेवा का संकल्प एक साथ आते हैं, तो परिवर्तन केवल कागजों पर नहीं होता वह घर, गाँव, खेत, स्कूल और समाज के जीवन में दिखाई देता है। आज जब भारत विकसित भारत 2047 के संकल्प की ओर बढ़ रहा है, तब इन 25 वर्षों की यात्रा से सबसे बड़ा संदेश यही निकलता है कि सेवा केवल एक दिन का संकल्प नहीं, बल्कि निरंतर चलने वाली जिम्मेदारी है। और जब हर नागरिक अपने हिस्से की सेवा का संकल्प लेता है, तभी जन सेवा वास्तव में देश सेवा बनती है।

–डॉ. मनीषा सिंह,
प्रदेश प्रवक्ता, भाजपा,
राजस्थान

नरेन्द्र भाई दामोदरदास मोदी - पं. दीनदयाल उपाध्याय के विरासत के सच्चे उत्तराधिकारी



बाचाराम बघेल

एकात्म मानववाद और अंत्योदय के प्रतिपादक पं. दीनदयाल उपाध्याय की 110वीं जयन्ती पर गत 25 सितम्बर को देशभर में आम और खास ने उनको सादर श्रद्धांजलि दी और उनके जीवन और आदर्शों से प्रेरित होने का संकल्प लिया। उनकी विचारधारा को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने जीवन में पूर्णतया अंगीकृत किया और करोड़ों लोगों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए। उपाध्याय जी के दर्शन का केन्द्र व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के हितों का संतुलन है। व्यक्ति राष्ट्र और समाज के लिए समर्पित रहे और उसकी आवश्यकताओं का ध्यान समाज और राष्ट्र रखे विशेषकर कमजोर वर्ग के व्यक्ति का समग्र विकास पूरे समाज और राष्ट्र का ध्येय है। उन्होंने समाज के अंतिम व्यक्ति की जरूरतों को पूरा करने के महत्व पर जोर दिया, जो अंत्योदय की अवधारणा में समाहित है, जिसका उद्देश्य सबसे अधिक हाशिए पर पड़े व्यक्तियों का उत्थान करना है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का शासन मॉडल मुख्य रूप से पंडित दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन पर आधारित है, विशेषकर उनके अंत्योदय और एकात्म मानव दर्शन के सिद्धांतों पर। पीएम मोदी ने उपाध्याय जी के विचारों को एक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था (स्वदेशी) और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़े एक समावेशी, विकेंद्रीकृत शासन के निर्माण के रूप में देखा है और उसी के हिसाब से नीतियां बनाई, शासन पद्धति को दिशा दी। आज के वैश्विक दौर में जब पूरी दुनिया आर्थिक क्षेत्र में संरक्षणवादी नीतियां अपना रही है, एआई के कारण विकसित देशों में बड़ी संख्या में कामगारों पर छंटनी का खतरा मंडरा रहा है, प्रधानमंत्री मोदी का मेक इन इन्डिया, वोकल फॉर लोकल, आत्मनिर्भर भारत जैसे कदम इसी अन्तिम व्यक्ति के आर्थिक और सामाजिक हितों की रक्षा के लिए घरेलू और छोटे उद्यमों को आत्मनिर्भर बनाने की गारंटी है। मोदी सरकार ने अपने प्रमुख कल्याणकारी कार्यक्रमों को इसी दृष्टिकोण के साथ लागू किया है, जिससे पिरामिड के सबसे निचले स्तर की सेवा के वैचारिक ढांचे को वास्तविक सरकारी योजनाओं में बदला जा सके।

प्रधानमंत्री मोदी इस बात पर जोर देते हैं कि सबसे वंचित और गरीब व्यक्तियों का विकास ही राष्ट्र-निर्माण की वास्तविक नींव है।

उन्होंने निरंतर सेवा को मूल मानते हुए "चरैवेति, चरैवेति, चरैवेति" (आगे बढ़ते रहो) का आव्हान कर देश के विकास को निरंतर प्रयास, नवाचार और समर्पित लोक सेवा से जोड़ा है। प्रधानमंत्री ने श्रमेव जयते के दर्शन के तहत लक्षित सामाजिक-आर्थिक सहायता के माध्यम से श्रम योगी (मजदूर) को राष्ट्र योगी (राष्ट्र-निर्माता) में बदला है। घरेलू विनिर्माण और रक्षा क्षमताओं को मजबूत करके आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता दी जिससे भारत पश्चिमी मानदंडों के बजाय स्थानीय मानकों की ओर बढ़ रहा है। इस दृष्टिकोण के तहत मोदी सरकार ने कई ऐसी योजनाएं शुरू की हैं जो सीधे तौर पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर हैं या मौलिक रूप से उनके अंत्योदय सिद्धांतों से प्रेरित हैं। इनमें दीनदयाल अंत्योदय योजना सतत आजीविका के अवसरों के माध्यम से गरीबी उन्मूलन पर केंद्रित हैं। दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना ग्रामीण भारत में कृषि और गैर-कृषि फीडरों को अलग करके निरंतर बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई जिससे करोड़ो किसानों, छोटे व्यापारियों, विद्यार्थियों और आम ग्रामीणों के जीवन में बड़ा परिवर्तन आया है। दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्या योजना ग्रामीण युवाओं के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया एक प्लेसमेंट-लिंक्ड कौशल विकास कार्यक्रम है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय श्रमेव जयते कार्यक्रम में श्रमिक कल्याण और स्व-प्रमाणन सुधारों को सुनिश्चित करते हुए औद्योगिक विकास के लिए एक पारदर्शी और डिजिटल इकोसिस्टम बनाया गया है। इसके अतिरिक्त मोदी सरकार ने डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर और डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए किया है कि योजना का लाभ बिना किसी बिचौलिए के सीधे समाज के सबसे निचले स्तर तक पहुंचे।

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना अन्तोदय से सीधी जुड़ी हुई है। इसके अन्तर्गत बुनियादी पोषण सुरक्षा को पूरा करते हुए 80 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को मुफ्त खाद्यान्न प्रदान किया जा रहा है। प्रधानमंत्री जन-धन योजना के माध्यम से बिना बैंक खाते वाले गरीब नागरिकों को औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से जोड़कर वित्तीय समावेशन सुनिश्चित किया गया है। प्रधानमंत्री आवास योजना में सभी के लिए आवास पर ध्यान केंद्रित कर सुनिश्चित किया गया कि बेघर लोगों को पक्के और सुरक्षित घर मिलें।

प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना में गरीबी रेखा से नीचे जीवन जी रहे परिवारों की महिलाओं को स्वास्थ्य और स्वच्छ ऊर्जा को प्राथमिकता देते हुए मुफ्त एलपीजी कनेक्शन दिया जा रहा है। आयुष्मान भारत दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना है जो गरीब परिवारों को मुफ्त माध्यमिक और तृतीयक अस्पताल देखभाल प्रदान करती है। पीएम किसान सम्मान निधि छोटे और सीमांत किसानों के बैंक खातों में सीधे हस्तांतरित की जाने वाली नकद आय सहायता योजना है जिससे अन्नदाता की आर्थिक स्थिति सुधरी है, खेती लाभ का सौदा बन गई है।

–बाचाराम बघेल,
पूर्व जिला परिषद सदस्य
भाजपा धौलपुर

राशिफल गुरूवार 8 अक्टूबर, 2026



पंडित अनिल शर्मा

अश्विन मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत-2083, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 9:20 तक, शुक्ल योग रात्रि 12:48 तक, गर करण दिन 10:46 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 3:18 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति– सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कर्क, बुध-कन्या, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज भद्रा रात्रि 10:16 से आरम्भ होगी। आज त्रयोदशी का श्राद्ध, प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि, कलियुगादि तिथि, युगाब्द 5:28 आरम्भ है।

श्रेष्ठ चौघड़िया– शुभ सूर्योदय से 7:53 तक, चर 10:47 से 12:14 तक, लाभ अमृत 12:14 से 3:09 तक, शुभ 4:16 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल– 1:30 से 3:00 तक, सूर्योदय 6:26, सूर्यास्त 6:03

मेष

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है और परेशानी हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

सिंह

मानसिक तनाव दूर होगा। मनो बल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक सफलता से आत्मविश्वास बढ़ेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति एवं आय में वृद्धि होगी।

कन्या

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ बनी रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

मकर

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब ह